23-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - हर बात में योग बल से काम लो, बाप से कुछ भी पूछने की बात नहीं है, तुम ईश्वरीय सन्तान हो इसलिए कोई भी आसुरी काम न करो"

प्रश्नः- तुम्हारे इस योगबल की करामात क्या है?

उत्तर:- यही योगबल है जिससे तुम्हारी सब कर्मेन्द्रियाँ वश हो जाती हैं। योग बल के सिवाए तुम पावन बन नहीं सकते। योगबल से ही सारी सृष्टि पावन बनती है इसलिए पावन बनने के लिए वा भोजन को शुद्ध बनाने के लिए याद की यात्रा में रहो। युक्ति से चलो। नम्रता से व्यवहार करो।

But we know, How Lucky & Great we are..!

ओम् शान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझाते हैं। दुनिया में किसको मालूम नहीं है कि रूहानी बाप आकर स्वर्ग की वा नई दुनिया की स्थापना कैसे करते हैं। कोई भी नहीं जानते हैं।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

तुम बाप से कोई भी प्रकार की मांगनी नहीं कर सकते हो। बाप सब कुछ समझाते हैं। कुछ भी पूछने की दरकार नहीं रहती, सब कुछ आपेही समझाते रहते हैं। बाप कहते हैं मुझे कल्प-कल्प इस भारत खण्ड में आकर क्या करना है, सो मैं जानता हूँ, तुम नहीं जानते। रोज़-रोज़ समझाते रहते हैं। कोई भल एक अक्षर भी न पूछे तो भी सब कुछ समझाते रहते हैं। कभी पूछते हैं खान-पान की तकलीफ होती है। अब यह तो समझ की बात है। बाबा ने कह दिया है हर बात में योगबल से काम लो, याद की यात्रा से काम लो और कहाँ भी जाओ तो मुख्य बात बाप को जरूर याद करना है। और कोई भी आसुरी काम नहीं करना है। हम ईश्वरीय सन्तान हैं वह है सबका बाप, सबके लिए शिक्षा यह एक ही देंगे। बाप शिक्षा देते हैं - बच्चे स्वर्ग का मालिक बनना है। राजाई में भी पोजीशन तो होती हैं ना। हर एक के पुरुषार्थ अनुसार मर्तबा होता है। पुरुषार्थ बच्चों को करना है और प्रारब्ध भी बच्चों को पानी है। पुरुषार्थ कराने लिए बाप आते हैं। तुमको कुछ भी पता नहीं था कि बाप

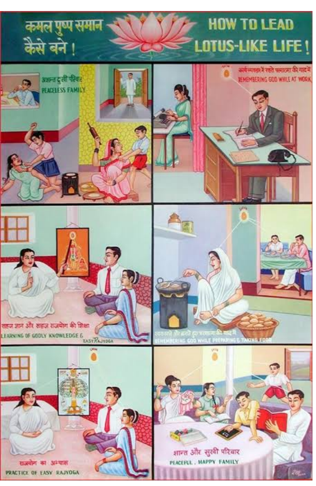

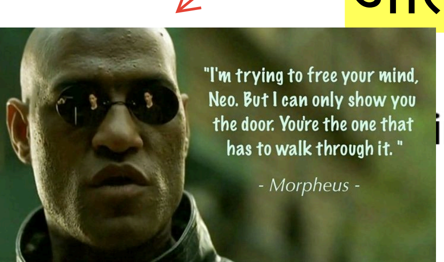

...ints: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

जी मेरे मीठे बाबा..

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

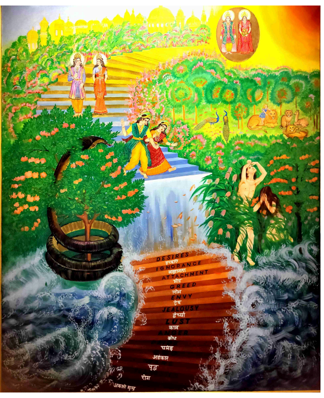

जी मेरे मीठे बाबा..

कब आयेंगे, क्या आकर करेंगे, कहाँ ले जायेंगे। बाप ही आकर समझाते हैं, ड्रामा के प्लैन अनुसार तुम कहाँ से गिरे हो। एकदम ऊंच चोटी से। ज़रा भी बुद्धि में नहीं आता कि हम कौन हैं। अब महसूस करते हो ना। तुमको स्वप्न में भी नहीं था कि बाप आकर क्या करेंगे। तुम भी कुछ नहीं जानते थे। अब बाप मिला हुआ है तो समझते हो ऐसे बाप के ऊपर तो न्योछावर होना पड़े। जैसे पतिव्रता स्त्री होती है तो पति पर कितना न्योछावर जाती है। चिता पर चढ़ने में भी डर नहीं होता है। कितनी बहादुर होती है। आगे चिता पर बहुत चढ़ती थी। यहाँ बाबा तो ऐसी कोई तकलीफ नहीं देते हैं। भल नाम ज्ञान चिता है परन्तु जलने करने की कोई बात नहीं। बाप बिल्कुल ऐसे समझाते हैं जैसे मक्खन से बाल। बच्चे समझते हैं बरोबर जन्म-जन्मान्तर का सिर पर बोझा है। कोई एक अजामिल नहीं। हर एक मनुष्य एक-दो से जास्ती अजामिल हैं। मनुष्यों को क्या पता पास्ट जन्म में क्या-क्या किया है। अभी तुम समझते हो पाप ही किये हैं, वास्तव में पुण्य आत्मा एक भी नहीं है।

Example

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

सब हैं पाप आत्मायें। पुण्य करें तो पुण्य आत्मा बन जायें। पुण्य आत्मायें होती हैं सतयुग में। कोई ने हॉस्पिटल आदि बनाई सो क्या हुआ। सीढ़ी उतरने से थोड़ेही बच जायेगा। चढ़ती कला तो नहीं होती है ना। गिरते ही जाते हैं। यह बाप तो ऐसा बील्वेड है जिस पर कहते हैं जीते जी न्योछावर जायें क्योंकि पतियों का पति, बापों का बाप सबसे ऊंच है।

चरणों मे जगह मांगी थी, हमें दिल मे बसा लिया,
थे एक नजर के प्यासे, नजरों में समा लिया,
आपका शुक्रिया, आपका शुक्रिया..

How lucky and Great we are...!

How Sweet...!

बच्चों को अभी बाप जगा रहे हैं। ऐसा बाबा जो स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, कितना साधारण है।

शुरू में बच्चियाँ जब बीमार पड़ती थी तो बाबा खुद उन्हों की सेवा करते थे। अहंकार कुछ भी नहीं। बापदादा ऊंच ते ऊंच है। कहते हैं जैसे कर्म मैं इनसे कराऊंगा, या करूंगा। दोनों जैसे एक हो जाते हैं। पता थोड़ेही पड़ता है। बाप क्या करते हैं, दादा क्या करते हैं। कर्म-अकर्म-विकर्म की गति बाप ही बैठकर समझाते हैं। बाप बहुत ऊंच है।

माया का भी कितना प्रभाव है। ईश्वर बाप कहते हैं ऐसा मत करो तो भी नहीं मानते हैं। भगवान कहते हैं - मीठे बच्चे, यह काम नहीं करना, फिर भी उल्टा काम कर देते हैं। उल्टे काम के लिए ही मना करेंगे ना। लेकिन माया भी बड़ी जबरदस्त है। भूले-चूके भी बाप को नहीं भूलना है। कुछ भी करें, मारे अथवा कूटे। ऐसा कुछ बाप करते नहीं हैं परन्तु यह एक्स्ट्रीम में कहा जाता है। गीत भी है तुम्हारे दर को कभी नहीं छोड़ेंगे। चाहे कुछ भी कहो। बाहर में रखा ही क्या है। बुद्धि भी कहती हैं जायेंगे कहाँ? बाप बादशाही देते हैं फिर थोड़ेही कभी मिलती है। ऐसे थोड़ेही है दूसरे जन्म में कुछ मिल सकता है। नहीं। यह पारलौकिक बाप है जो बेहद सुखधाम का तुमको मालिक बनाते हैं। बच्चों को दैवीगुण भी धारण करने हैं, सो भी बाप राय देते हैं। अपना पुलिस आदि का काम भी करो, नहीं तो डिसमिस कर देंगे। अपना काम तो करना ही है, आंख दिखानी पड़ती है। जितना हो सके प्रेम से काम लो। नहीं तो युक्ति से आंख दिखाओ। हाथ नहीं चलाना है। बाबा के कितने ढेर बच्चे हैं। बाबा

अभी नहीं तो कभी नहीं

को भी बच्चों का ओना (ख्याल) रहता है ना। मूल बात है पवित्र रहना। जन्म जन्मान्तर तुमने पुकारा है ना - हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ। परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं समझते। बुलाते हैं तो जरूर पतित हैं। नहीं तो बुलाने की दरकार नहीं। पूजा की भी दरकार नहीं। बाप समझाते हैं तुम अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं, सहन करना ही है। युक्तियाँ भी बतलाते रहते हैं। बहुत नम्रता से चलो। बोलो, आप तो भगवान हो फिर यह क्या मांगते हो? हथियाला बांधते समय कहते हैं - मैं तुम्हारा पति ईश्वर गुरू सब कुछ हूँ, अब मैं पवित्र रहना चाहती हूँ, तो तुम रोकते क्यों हो। भगवान को तो पतित-पावन कहा जाता है ना। आप ही पावन बनाने वाले बन जाओ। ऐसे प्यार से नम्रता से बात करनी चाहिए। क्रोध करे तो फूलों की वर्षा करो। मारते हैं फिर अफसोस भी करते हैं। जैसे शराब पीते हैं तो बड़ा नशा चढ़ जाता है। अपने को बादशाह समझते हैं। तो यह विष भी ऐसी चीज़ है बात मत पूछो। पछताते भी हैं परन्तु आदत पड़ी है तो वह टूटती नहीं है। एक-दो बार

जी मेरे मीठे बाबा..

Simple Logic

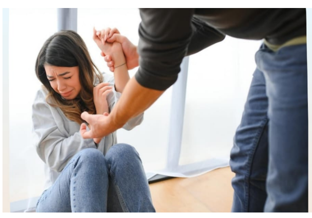

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ये पक्का समझ लो..

विकार में गया, बस नशा चढ़ा फिर गिरते रहेंगे। जैसे नशे की चीज़ें खुशी में लाती हैं, विकार भी ऐसे हैं। यहाँ फिर बड़ी मेहनत है। सिवाए योगबल के कोई भी कर्मेन्द्रियों को वश नहीं कर सकते। योगबल की ही करामात है, तब तो नाम मशहूर है, बाहर से आते हैं यहाँ योग सीखने। शान्ति में बैठे रहेंगे। घरबार से दूर हो जाते हैं। वह तो है आधाकल्प के लिए आर्टीफीशियल शान्ति। किसको सच्ची शान्ति का मालूम ही नहीं। बाप कहते हैं बच्चे, तुम्हारा स्वधर्म ही है शान्त, इस शरीर से तुम कर्म करते हो। जब तक शरीर धारण न करे तब तक आत्मा शान्त रहती है। फिर कहाँ न कहाँ जाकर प्रवेश करती है। यहाँ तो फिर कोई-कोई सूक्ष्म शरीर से धक्के खाती रहती है। वह छाया के शरीर होते हैं, कोई दु:ख देने वाले होते हैं, कोई अच्छे होते हैं, यहाँ भी कोई भले मनुष्य होते हैं जो किसको दु:ख नहीं देते हैं। कोई तो बहुत दु:ख देते हैं। कोई जैसे साधू महात्मा होते हैं।

हाँ मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

23-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

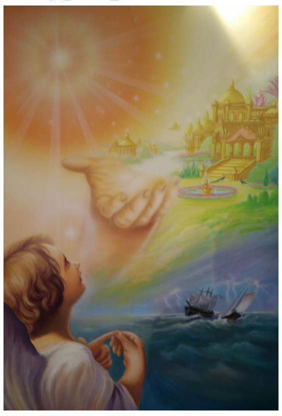

बाप समझाते हैं मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों तुम 5 हज़ार वर्ष के बाद फिर से आकर मिले हो। क्या लेने लिए? बाप ने बताया है तुमको क्या मिलने का है। बाबा आपसे क्या मिलना है, यह तो प्रश्न ही नहीं। आप तो हो ही हेविनली गॉड फादर। नई दुनिया के रचयिता। तो जरूर आपसे बादशाही ही मिलेगी। बाप कहते हैं थोड़ा भी कुछ समझकर जाते हैं तो स्वर्ग में जरूर आ जायेंगे। हम स्वर्ग की स्थापना करने आये हैं। बड़े से बड़ा आसामी है भगवान और प्रजापिता ब्रह्मा। तुम जानते हो विष्णु कौन है? और कोई को भी पता नहीं है। तुम तो कहेंगे हम इनके घराने के हैं, यह लक्ष्मी-नारायण तो सतयुग में राज्य करते हैं। यह चक्र आदि वास्तव में विष्णु को थोड़ेही है। यह अलंकार हम ब्राह्मणों के हैं। अभी यह नॉलेज है। सतयुग में थोड़ेही यह समझायेंगे। ऐसी बातें बताने की कोई में ताकत नहीं है। तुम इस 84 के चक्र को जानते हो। इनका अर्थ कोई समझ न सके। बच्चों को बाप ने समझाया है। बच्चे समझ गये हैं, हमको तो यह अलंकार शोभते नहीं। हम अभी शिक्षा पा रहे

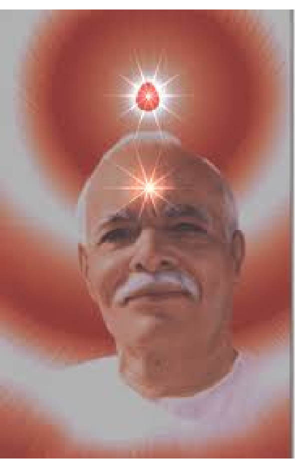

Exclusive Authority of Shiv baba

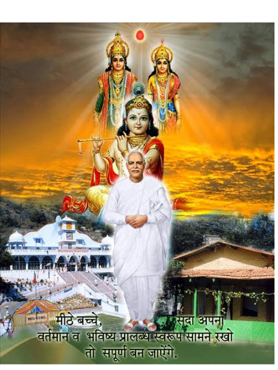

But we know, How Lucky & Great we are..!

हैं। पुरुषार्थ कर रहे हैं। फिर ऐसे बन जायेंगे। स्वदर्शन चक्र फिराते-फिराते हम देवता बन जायेंगे। स्वदर्शन चक्र अर्थात् रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानना है। सारी दुनिया में कोई भी यह समझा नहीं सकते कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। बाप कितना सहज कर समझाते हैं - इस चक्र की आयु इतनी बड़ी तो हो नहीं सकती। मनुष्य सृष्टि का ही समाचार सुनाया जाता है कि इतने मनुष्य हैं। ऐसे थोड़ेही बताया जाता है कि कुछए कितने हैं, मछलियाँ आदि कितनी हैं, मनुष्यों की ही बात है। तुमसे भी प्रश्न पूछते हैं, बाप सब कुछ बतलाते रहते हैं। सिर्फ उस पर पूरा ध्यान देना है।

बाबा ने समझाया है - योगबल से तुम सृष्टि को पावन बनाते हो तो क्या योगबल से खाना शुद्ध नहीं हो सकता है? अच्छा, तुम तो ऐसे बने हो। फिर कोई को आप समान बनाते हो? अभी तुम

पुछो अपने आप से...

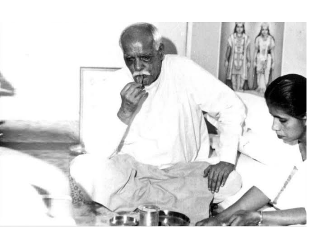

बच्चे समझते हो कि बाप आया है स्वर्ग की बादशाही फिर से देने। तो इनको रिफ्यूज़ नहीं करना है। विश्व की बादशाही रिफ्यूज़ की तो खत्म। फिर रिफ्यूज़ (किचड़े के डिब्बे) में जाकर पड़ेंगे। यह सारी दुनिया है किचड़ा। तो इनको रिफ्यूज़ ही कहेंगे। दुनिया का हाल देखो क्या है। तुम तो जानते हो हम विश्व के मालिक बनते हैं। यह किसको पता नहीं है कि सतयुग में एक ही राज्य था, मानेंगे नहीं। अपना घमण्ड रहता है तो फिर ज़रा भी सुनते नहीं, कह देते यह सब आपकी कल्पना है। कल्पना से ही यह शरीर आदि बना हुआ है। अर्थ कुछ नहीं समझते। बस यह ईश्वर की कल्पना है, ईश्वर जो चाहे सो बनते हैं, उनका यह खेल है। ऐसी बातें करते हैं, बात मत पूछो। अभी तुम बच्चे जानते हो बाबा आया हुआ है। बुढ़ियाँ भी कहती हैं - बाबा हर 5 हज़ार वर्ष के बाद हम आपसे स्वर्ग का वर्सा लेते हैं। हम अभी आये हैं स्वर्ग की राजाई लेने। तुम जानते हो कि सभी एक्टर्स का अपना पार्ट है। एक का पार्ट न मिले दूसरे से। तुम फिर इसी ही नाम रूप में आकर

आया समय बड़ा बेढंगा
आज आदमी बना लफ़ंगा
कहीं पे झगड़ा कहीं पे दंगा
नाच रहा नर हो कर नंगा
छल और कपट के हाथों अपना
बेच रहा ईमान, कितना ...

अनेक मत मतान्तर

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Point to ponder deeply...

23-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

इसी समय बाप से वर्सा लेने का पुरुषार्थ करेंगे। कितनी अथाह कमाई है। भल बाबा कहते हैं थोड़ा भी सुना है तो स्वर्ग में आ जायेंगे। परन्तु हर एक मनुष्य पुरुषार्थ तो ऊंच बनने का ही करते हैं ना। तो पुरुषार्थ है फर्स्ट। अच्छा!

Point to be Noted

Point to be Noted

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

धारणा के लिए मुख्य सार:-

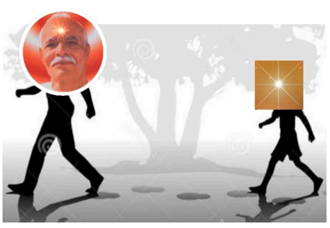

1) जैसे बाबा बच्चों की सेवा करते हैं, कोई अहंकार नहीं, ऐसे फालो करना है। बाप की श्रीमत पर चलकर विश्व की बादशाही लेनी है, रिफ्यूज़ नहीं करनी है।

2) बापों का बाप, पतियों का पति जो सबसे ऊंच है, बील्वेड है उस पर जीते जी न्योछावर जाना है। ज्ञान-चिता पर बैठना है। कभी भूले चूके भी बाप को भूल उल्टा काम नहीं करना है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

23-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:-खुशियों के अखुट खजाने से भरपूर सदा बेफिकर बादशाह भव

खुशियों के सागर द्वारा रोज़ खुशी का अखुट खजाना मिलता है इसलिए किसी भी परिस्थिति में खुशी गायब नहीं हो सकती। किसी भी बात का फिकर हो नहीं सकता।

ऐसे नहीं प्रापर्टी का क्या होगा, परिवार का क्या होगा। परिवर्तन ही होगा ना।

पुरानी दुनिया में कितना भी श्रेष्ठ हो लेकिन सब पुराना ही है इसलिए बेफिकर बन गये।

ये पक्का समझ लो..

जो होगा अच्छा होगा। ब्राह्मणों के लिए सब अच्छा है, कुछ भी बुरा नहीं।

आपके पास यह ऐसी बादशाही है जिसे कोई भी छीन नहीं सकता।

स्लोगन:- इस संसार को एक अलौकिक खेल और परिस्थितियों को खिलौना मानकर चलो तो कभी निराश नहीं होंगे।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

अव्यक्त इशारे -

अब लगन की अग्नि को प्रज्वलित कर योग को ज्वाला रूप बनाओ

लास्ट सो फास्ट पुरुषार्थ ज्वाला-रूप का ही रहा हुआ है।

पाण्डवों के कारण यादव रूके हुए हैं।

पाण्डवों की श्रेष्ठ शान, रूहानी शान की स्थिति यादवों के परेशानी वाली परिस्थिति को समाप्त करेगी।

तो अपनी शान से परेशान आत्माओं को शान्ति और चैन का वरदान दो।

Definition of ज्वाला स्वरूप अर्थात् लाइट हाउस और माइट हाउस स्थिति को समझते हुए इसी पुरुषार्थ में रहो।

पुछो अपने आप से...

20

इतने अभ्यासी हुए हो कि कुछ भी सहज ही शरीर से निकल जाएंगे। यह प्रेक्टिस हैं? कोई भी सम्बन्ध व संस्कार कसमकस न करे। जाना तो सबको है लेकिन एक जाएंगे सहज, एक जाएंगे युद्ध करते-करते। तो जाने के लिए तैयार हो यह तो ठीक, लेकिन सहज जाएंगे, यह तैयारी हैं? डायरेक्ट जायेंगे या वाया जायेंगे? 'धर्मराजपुरी कस्टम पुरी है'। अगर कुछ साथ में रह गया तो कस्टम में रूकना पडेगा। तो जाने के साथ यह भी तैयारी चाहिए। देखना कस्टम क्लियर है? पासपोर्ट आदि, सब चेक करना, बैग-बैगेज सब चेक करना।

समझा?

22/9/25

(11.05.1977)

6.4.3 तीन बिन्दियों का तिलक :

(इ) सदा अमृतवेले स्वयं को तीन बिन्दियों का तिलक देते हो? तिलक का अर्थ क्या है? स्मृति का तिलक। तिलक राज्य की भी निशानी है। जब राज्य देते हैं तो राज-तिलक कहा जाता है और भक्ति में भी तिलक की निशानी ज़रूर रखेंगे और सुहाग तथा भाग्य की निशानी भी तिलक है। तो तिलक का महत्त्व है क्योंकि तिलक स्मृति की भी निशानी है। जैसी स्मृति वैसी स्थिति होती है। अगर स्मृति श्रेष्ठ है तो स्थिति भी श्रेष्ठ होगी। अगर स्मृति व्यर्थ है तो स्थिति भी समर्थ की बजाय व्यर्थ हो जाती है। तो बाप ने तीन बिन्दियों का तिलक अर्थात् तीन स्मृतियों का तिलक दिया है क्योंकि तीनों ही स्मृति आवश्यक हैं और तीनों ही बिन्दी सहज हैं। छोटे बच्चे को भी कहो कि बिन्दी लगाओ तो लगा देगा ना! तो **मैं आत्मा हूँ — यह स्व की स्मृति, फिर बाप की स्मृति और फिर श्रेष्ठ कर्म के लिए ड्रामा की स्मृति।** ड्रामा चलता रहता है, बीत जाता है। जो अभी प्रेज़न्ट है वो सेकण्ड में पास्ट हो जाता है। तो बीत जाता है इसीलिये बीती सो बीती, फुलस्टॉप (.)। तो बिन्दी हो गयी ना! तो यह तीनों स्मृति सदा हैं तो स्थिति भी श्रेष्ठ है। सिर्फ आत्मा की स्मृति नहीं। आत्मा के साथ बाप की स्मृति है ही है और बाप के साथ ड्रामा की स्मृति भी अति आवश्यक है। अगर ड्रामा का ज्ञान नहीं है तो भी कर्म में नीचे-ऊपर होंगे। जो

समझा?

23/9/25

ड्रामा

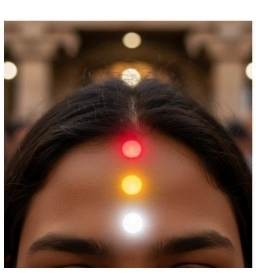

भी भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ आती हैं, उसमें ड्रामा का ज्ञान अति आवश्यक है। अनुभवी हो ना! क्या स्मृति रहती है? होना ही है, नथिंग न्यू। पहले से ही जानते हैं कि यह होना है तो विचलित नहीं होंगे। **रोज़ अमृतवेले अपने आपको तीन बिन्दियों की स्मृति का तिलक लगाओ**, तो एक खज़ाना भी व्यर्थ नहीं जायेगा। हर समय, हर खज़ाना जमा होता जायेगा। **अमृतवेले जब बैठते हैं, अच्छी स्थिति में बैठते हैं तो दिल-ही-दिल में बहुत वायदे करते हैं — यह करेंगे, यह करेंगे। कमाल करके दिखायेंगे...। यह तो अच्छी बात है। श्रेष्ठ संकल्प करते हैं लेकिन बापदादा कहते हैं इन सब वायदों को कर्म में लाओ। सिर्फ वायदा नहीं करो, लेकिन जो भी वायदे करते हो वह मन-वचन और कर्म में लाओ।**